ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-07-01-2021 ***खतरे की घंटी***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

खतरे की घंटी

भोग की सनक में लोग प्रकृति से छेड़-छाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। अब धनी लोग गंगोत्री-यमुनोत्री में पिकनिक मनाते हैं। वहाँ टनों कूड़ा-कबाड़ छोड़ आते हैं। उससे नदियों का पानी दूषित हो गया है। वाहनों के आने-जाने से कार्बन की मात्रा बढ़ गयी है। ग्लेशियर पीछे खिसकने लगे हैं। गंगा-यमुना के स्रोत कब बंद हो जाएँ, कहा नहीं जा सकता है। इस मानसिकता के साथ-साथ दिनों-दिन बढ़ती जनसंख्या कोढ़ में खाज सिद्ध हो रही है। इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शहरों-कस्बों में कारखाने ही कारखाने खुल गये हैं। इससे बस्ती का वातावरण दूषित हो गया है। ध्वनि प्रदूषण बढ़ गया है। कारखानों का गंदा-विषैला पानी नदियों को दूषित कर रहा है। नदियों का दूषित पानी समुद्र को भी दूषित कर रहा है, जिससे समुद्री जीव-जंतुओं का जीवन संकट में पड़ गया है। वन-६ |-क्षेत्रों के
~~~~~~~~~~

विनाश से और बढ़ते हुए प्रदूषण से ऑक्सीजन की कमी हो गयी है। विशेषकर कोलकाता, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद जैसे-शहरों में। इस प्रकार जल और वायू दोनों प्रदूषित हो गये हैं। वनस्पति और औषधियों, यानी जड़ी-बूटियों का सर्वथा लोप हो चला है। जो शेष हैं, उनका अमृत-तत्व नष्ट हो गया है। विकास के नाम पर हमने प्रकृति का श्रृंगार उजाड़कर रख दिया है। उसका संतुलन बिगड़ गया है। उसकी व्यवस्था भोग की सनक में लोग प्रकृति से छेड़-छाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। अब धनी लोग गंगोत्री-यमुनोत्री में पिकनिक मनाते हैं। वहाँ टनों कूड़ा-कबाड़ छोड़ आते हैं। उससे नदियों का पानी दूषित हो गया है। वाहनों के आने-जाने से कार्बन की मात्रा बढ़ गयी है। ग्लेशियर पीछे खिसकने लगे हैं। गंगा-यमुना के स्रोत कब बंद हो जाएँ, कहा नहीं जा सकता है। इस मानसिकता के साथ-साथ दिनों-दिन बढ़ती जनसंख्या कोढ़ में खाज सिद्ध हो रही है। इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शहरों-कस्बों में कारखाने ही कारखाने खुल गये हैं। इससे बस्ती का वातावरण दूषित हो गया है। ध्वनि प्रदूषण बढ़ गया है। कारखानों का गंदा-विषैला पानी नदियों को दूषित कर रहा है। नदियों का दूषित पानी समुद्र को भी दूषित कर रहा है, जिससे समुद्री जीव-जंतुओं का जीवन संकट में पड़ गया है। वन-६ |-क्षेत्रों के विनाश से और बढ़ते हुए प्रदूषण से ऑक्सीजन की कमी हो गयी है। विशेषकर कोलकाता, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद जैसे-शहरों में। इस प्रकार जल और वायू दोनों प्रदूषित हो गये हैं। वनस्पति और औषधियों, यानी जड़ी-बूटियों का सर्वथा लोप हो चला है। जो शेष हैं, उनका अमृत-तत्व नष्ट हो गया है। विकास के नाम पर हमने प्रकृति का श्रृंगार उजाड़कर रख दिया है। उसका संतुलन बिगड़ गया है। उसकी व्यवस्था गड़बड़ा गयी है। वह कब कुपित हो उठे, कहा नहीं जा सकता।

जो दशा हमारे देश की है, लगभग वही सारे विश्व की है। सब आज की चिंता में जी रहे हैं। कल की किसी को चिंता है। कल-कारखानों, रेलगाड़ियों, मोटर-ट्रकों, कारों-बसों तथा दुपहिया-तिपहिया वाहनों द्वारा विसर्जित कार्बन से सारा वातावरण

विषाक्त हो उठा है। फलतः लोग तरह-तरह के घातक रोगों के शिकार हो रहे हैं। इधर धरती का कवच नष्ट हो गया है तो उधर आकाश

कवच फट गया है। विकसित देशों को, जो प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं, इसकी कतई चिंता नहीं है। 1992 में जून के में, दक्षिणी अमरीका के रियो-डि-जेनरों में पृथ्वी पर फैलते जा रहे प्रदूषण की रोकथाम पर विचार करने के लिए एक सौ देशों का एक सम्मेलन हुआ। उसमें अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति ने गर्व पूर्वक घोषणा की थी कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका राष्ट्र की आर्थिक दशा के हित में प्रदूषण फैलाने का अधिकार है।. धनी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार ही = निर्धारित करेंगे। गर्वीले देशों की ऐसी उक्तियों ने संसार को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

वनों के विनाश का, जल और वायु के प्रदूषण का, खनिज पदार्थों के दोहन का, पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों औ समुद्री जीव-जंतुओं के अंधाधुंध विनाश का और जीते-जागते मनुष्यों को पल भर में मौत की नींद सुला देने वाले घाट निर्माण का प्रमुख कारण पश्चिमी संस्कृति-सभ्यता की अक्षय भूख है। दोहन, शोषण और विनाश पर पली-बढ़ी यह मानव जाति और स्वयं अपने लिए भी घातक सिद्ध होगी यह प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। कारण कि इस संस्कृति का सृष्टि के पोषण और संरक्षण से तीन और छह का संबंध है। आज यह भोगोन्मुख संस्कृति संसार के सभी देशों पर हावी है। इसके सामने संयम, पोषण और संरक्षण की विचार धारा अप्रभावी हो गयी है, निरर्थक हो गयी है। इसी का परिणाम है कि आज संसार ऐसे खतरनाक मोड़ पर आ पहुँचा है कि कुछ ऐसे आगे बढ़ने पर सर्वनाश निश्चित है। निश्चित इसलिए है कि अब बढ़ा हुआ कदम हटाना मुश्किल है।

खतरे की घंटी रह-रह कर बज रही है। अगर मनुष्य को अब भी सद्बुद्धि नहीं आयी और उसने दीवार पर लिखा हुआ भविष्य-लेख नहीं पढ़ा तो विधाता को दोष देना व्यर्थ होगा।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'